आज की मुरली पर विचार-सागर-मंथन Date: 14-06-2014

बाबा ने कहा, तुम अब आपस में रुहानी भाई-भाई हो, तुम्हारा रुहानी प्यार होना चाहिए, आत्मा का प्यार आत्मा से हो, जिस्म से नहीं.

क्या हैं रुहानी प्यार? रुहानी प्यार और जिस्मानी प्यार में क्या फर्क हैं?

आज मुरली में बाबा ने जिस्मानी प्यार का दृष्टांत देते हुए समझाया की जैसे कन्या होती हैं तो वह जानती नहीं की हमको कौन पति मिलेगा, चित्र देखती हैं तो उनकी याद ठहर जाती हैं. कहॉ भी रहते एक-दो के चित्र को बुद्धि में रख एक-दो को याद करते रहते हैं, इसको कहा जाता हैं जिस्मानी प्यार. जब मनुष्य एक-दूसरे के शरीर को देख कर एक-दूसरे से प्यार करते हैं तो वह जिस्मानी प्यार हो जाता हैं. फिर कई मनुष्य एक-दूसरे के शरीर को टंच किये बिना प्यार करते हैं तो इसे काम विकार से परे, जिस्मानी प्यार कहा जाता हैं. इस प्यार में भी मोह की रग तो रहती हैं इसलिए लैला-मजनू या हिर-राजा की कहानी में वह एक-दूसरे को शरीर से टंच नहीं करते लेकिन एक-दूसरे में अतिशय मोह हैं, एक-दूसरे के शरीर के चित्र से ही प्यार करते दिखाते हैं. लेकिन मोह के कारण एक-दूसरे से इतना प्यार होते भी दुखी होते रहते हैं.

बाबा ने रुहानी प्यार को समझाते हुए कहा, बच्चों का रुहानी बाप के साथ (यानी आत्माओं का परमात्मा के साथ) और बच्चों का बच्चों के साथ (यानी आत्माओं का आत्माओं के साथ) प्यार ही रुहानी प्यार हैं. बाबा ने आगे कहा ये शिक्षा भी अभी तुम बच्चों (ब्राह्मण आत्माओं) को ही मिलती हैं. बाबा ने कहा, तुम सब आपस में (यानी सर्व मनुष्य आत्माये) भाई-भाई हो तो आपस में जरूर प्यार होना चाहिए क्योंकि एक बेहद के बाप के सब बच्चे हो ना. इसे ये बात स्पष्ट

होती हैं की रुहानी प्यार ही हैं बेहद का प्यार, जहॉ एक आत्मा अन्य आत्मा से उसका शरीर का वर्ण, वर्ग, जाती-भेद, काला, गोरा, धर्म, देश को न देख, निस्स्वार्थ प्यार करती हैं. इस प्यार में एक आत्मा अन्य आत्मा से आत्मा के ओरिजिनल गुण, सुख-शांति-प्रेम-आनंद को ही एक-दूसरे को देती हैं.

बाबा हमें ऐसा रुहानी प्यार सिखाते हैं जो कल्प में देवी-देवताओं से लेकर कलियुग के विकारी मनुष्य तक किसी ने किया नहीं हैं. सतयुग के लक्ष्मी-नारायण भी अपने बच्चे को या नजदीक वालों को प्यार करेंगे, वह अपने को आत्मा समझते हैं लेकिन प्यार तो शरीर को देखकर ही करेंगे. ऐसे नहीं के सतयुग के लक्ष्मी-नारायण सारी प्रजा को प्यार करेंगे. देवताये खुद को आत्मा समझ कर प्यार करते हैं तो उनके प्यार में कोई विकार की बात नहीं. लेकिन उनका प्यार भी बेहद का नहीं.

हम ब्राह्मण आत्माये कितनी भाग्यशाली हैं जो स्वयं रुहानी बाप ने (जो विश्व की सर्व आत्माओं का बाप हैं) हमें सच्चा बेहद का रुहानी प्यार सिखा रहे हैं.

बाबा से ये बेहद का रुहानी प्यार पा कर हम आत्माये यही गाती हैं वाह मेरा प्यार का सागर बाबा बाह. तेरा कितना न शुक्रिया अदा करूँ.

शुक्रिया बाबा शुक्रिया तेरा पदमापदम शुक्रिया.

ॐ शांति.

Pls. provide your feedback to Atma bhai on email –
a.brahmin.soul@gmail.com
www.bkdrluhar.com